IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, June 2021
Impact Factor: 5.731

दलित अभिव्यक्ति का प्रथम सशक्त स्वर : हीरा डोम

डॉ. अजय कुमार बिंद
अिस.प्रो.- हिंदी
राजकीय महाविद्यालय, नानौता, सहारनपुर
drajaybind@gmail.com

प्रथम विश्वयुद्ध तक दलित रचनाकारों का कहीं संकेत नहीं मिलता है। भारतेंदु-द्विवेदी युग के रचनाकार अतीत गौरव, संस्कृति और समाज सुधार की भावना में बह रहे थे। अचानक ही दलित साहित्य के दो रचनाकारों ने मंच पर आकर अतीत के मूल्यों के विरोध में स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों को अभिव्यक्त किया। उस अतीत गौरव का खंडन किया, जिसके ऊपर हिंदी मुख्य धारा का रचनाकार मुग्ध था। इस अचानक दिखने वाले परिवर्तन के पीछे निम्नलिखित कारण थे-

-अंग्रेजी शासन (कानून की समानता का अधिकार, प्रतिनिधि शासन की अवधारणा)
-महाराष्ट्र में सत्यशोधक आंदोलन और शिक्षा के महत्त्व की चेतना
-कम्यूनल अवार्ड की घोषणा और जनगणना संबंधी विवाद
-प्रथम विश्वयुद्ध में दलितों और खेतिहर जातियों की भागीदारी

अंग्रेजी शासन ने जाति पर आधारित न्याय व्यवस्था के स्थान पर आधुनिक न्याय प्रणाली की स्थापना की। इस प्रणाली में शूद्र और ब्राह्मण को बराबर माना गया। इसके साथ ही संपत्ति जैसे मामलों में कानूनी संरक्षण उपलब्ध हुआ। इस कारण दलित सुरक्षित रूप से अपने अधिकारों की मांग कर सके और अपनी अभिव्यक्ति की आज़ादी के द्वारा जनमत बना सके।

स्वामी अछूतानंद के कहने पर ही वायसराय ने आदि हिंदू धर्म की सभाओं के लिए पुलिस सुरक्षा उपलब्ध कराने का आदेश जारी किया। इससे वे बिना किसी भय के अपनी बात कह सके। दूसरी ओर ज्योतिबा फुले ने दलित बहुजन समाज का सत्यशोधक आंदोलन खड़ा किया। इस आंदोलन ने शिक्षा को सर्वोच्च महत्त्व दिया-

“शिक्षित बनो” उनका नारा था।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, June 2021
Impact Factor: 5.731

1909 में मार्ले-मिंटो सुधारों द्वारा मुस्लिम समाज को सामुदायिक प्रतिनिधित्व का अधिकार दिया गया। इसके बाद जनगणना और प्रतिनिधित्व को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ। प्रश्न यह था कि अछूत हिंदू हैं या नहीं? यदि नहीं, तो उनकी गणना हिंदुओं में क्यों?

इस प्रश्न ने हिंदू समाज को चिंतित कर दिया। एक ओर उन्हें संख्या की आवश्यकता थी, दूसरी ओर सस्ते श्रम के लिए सेवक जातियों की भी जरूरत थी। परिणामस्वरूप, उन्होंने कथनी में हिंदू एकता की बात की, लेकिन व्यवहार में दलितों को सत्ता और शिक्षा से दूर रखने का प्रयास किया।

प्रथम विश्वयुद्ध ने भी दलित चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बड़ी संख्या में दलित वर्ग सेना में भर्ती होकर विदेश गए। उन्होंने नई दुनिया देखी। वापस आने पर वे पुनः जाति बंधनों में बंधने को तैयार नहीं थे।

इन परिस्थितियों के कारण दलित समाज की स्थिति में सुधार हुआ और साहित्य में उनकी उपस्थिति दिखाई देने लगी। स्वामी अछूतानंद और हीरा डोम ने अपने समय की धड़कनों को अपने साहित्य में व्यक्त किया।

हिंदी दलित कविता मुख्यतः 1990 के दशक से उभरती है, लेकिन इसकी जड़ें पहले की रचनाओं में मिलती हैं। हीरा डोम की एकमात्र प्रसिद्ध रचना 'अछूत की शिकायत' है। इसी एक कविता से उन्होंने हिंदी साहित्य में अपनी अमिट पहचान बनाई।

हीरा डोम की कविता की विशेषताएँ

उनकी कविता में कलात्मकता से अधिक अनुभूति और पीड़ा है

यह केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक दलित पीड़ा की अभिव्यक्ति है

इसमें आशा की किरण बहुत कम दिखाई देती है

गहरा अंधकार और संघर्ष प्रमुख है

उदाहरण–

"हमनी के राति दिन दुखवा भोगत बानी
हमनी के साहेब से मिनती सुनाइबि
हमनी के दुख भगवानो न देखताजे
हमनी के कब तक कलेसवा उठाइबि"

ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, June 2021
Impact Factor: 5.731

यह केवल रोना नहीं, बल्कि गहरी मानवीय पीड़ा का विस्फोट है। हीरा डोम की कविता में समानता की चेतना भी स्पष्ट है-

"हमनी के देहिया हडवा मसुईया कइ
ओकरे देहिया ब्राहमनन के बानी"

अर्थात शरीर सबका समान है, फिर भेदभाव क्यों?

उन्होंने भोजपुरी भाषा में लेखन किया, जो लोकभाषा की सादगी और सहजता को दर्शाता है। उनकी कविता में कोई कृत्रिमता नहीं है, बल्कि सीधी और सशक्त अभिव्यक्ति है।

निष्कर्षतः प्रसिद्ध लेखिका अरुंधति रॉय ने डॉ. अंबेडकर के संदर्भ में कहा है -

"पढ़ने से, पढ़ाई के साथ और पढ़कर ही समाज में क्रांति हुई है।"

स्वामी अछूतानंद और हीरा डोम दोनों ने दलित समाज में चेतना जगाने का कार्य किया।

जहाँ अछूतानंद ने संगठन और आंदोलन का मार्ग अपनाया, वहीं हीरा डोम ने अपनी कविता के माध्यम से दलित पीड़ा और चेतना को स्वर दिया।

Copyright to IJARSCT